शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 3, pp (241-246), Month: Sep. 2018

भारतीय सांगीतिक परम्परा : एक अवलोकन

डॉ0 रूचिमिता पाण्डे
एसोसिएटप्रोफेसर, संगीत विभाग
डी0जी0पी0जी0 कॉलेज, कानपुर

सारांश

संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग है। संगीत मनुष्य के जीवन्त होने का प्राथमिक प्रमाण है और किसी भी देश के इतिहास का अध्ययन करने का प्रमाणिक आधार भी है। तात्पर्य यह है कि आदिकाल से आधुनिक काल तक मनुष्य की उन्नति का यदि ग्राफ खींचना हो तो संगीत ही सर्वाधिक उत्तम माध्यम है जो किसी देश, समाज, संस्कृति का अध्ययन करने का प्रामाणिक आधार है क्योंकि संगीत मनुष्य की दैनिक चर्चा से जुड़ा होता है।

वाणी, ईश्वर प्रदत्त एक ऐसा उपहार है जो मनुष्य को अन्य जीवों से पृथक करता है। संभवतः सभ्यता के प्रारम्भ में मनुष्य ने वाणी के इसी वरदान की सहायता से सर्वप्रथम भाषा और फिर संगीत की उत्पत्ति की। संगीत प्रत्येक मनुष्य में अंतनिर्हित एक ऐसी विशेषता है जो किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है यही कारण है कि प्रकृति, संगीत और मनुष्य तीनों का आपस में अंतर्सम्बन्ध सर्वविदित है। संगीत की उत्पत्ति का आधार हमारे धर्म, प्रकृति और संस्कृति से जुड़ा है यही कारण है कि किसी देश के ऐतिहासिक पक्ष का अध्ययन करने के लिये यह सबसे उत्तम माध्यम है।

विख्यात इतिहासकार डेविड मैक्क्लोग के अनुसार इतिहास का अध्ययन उस पुराने अंधकार और जोखिम भरे काल में पथ प्रदर्शक का कार्य करता है जिसके द्वारा हमें ज्ञात होता है कि हम क्या हैं? क्यों हैं? और आज जिस रूप में हैं वो कैसे हैं?

संगीत के विभिन्न युगों का अध्ययन इतिहास के इसी अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है जिसके द्वारा मनुष्य की वास्तविक प्रगति औरविकास का आकलन किया जा सकता है। किसी भी देश के इतिहास में संगीत का अध्ययन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो उस देश की भौगोलिक स्थिति, वहाँ की संस्कषति, लोग आदि का वास्तविक प्रतिबिम्ब होता है।

मुख्य बिन्दु

सार्वभौमिक भाषा, भारतीय संस्कृति, नादवेद, सांस्कारिक, मैलोडी, हारमोनी, मौखिक परम्परा, परिवर्तनशीलता, भटियाली धुन, रीतिरिवाज, लोक संस्कृति, लोक गाथायें, नृत्य नाटिकायें

संगीत का विचित्र संसार

संगीत है शक्ति ईश्वर की, हर स्वर में बसे हैं राम
रागी जो सुनाये रागिनी रोगी को मिले आराम

संगीत एक सार्वभौमिक भाषा है जो देश, प्रदेश, राज्य सभी की सीमाओं से परे जन–मानस की भाषा है और कोई भी सह्रदय व्यक्ति इसके प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है और हमारी संस्कृति पर आदिकाल से ही संगीत की अभूतपूर्व छाप है। यह अमूक की वाणी है जिसे विद्वानों ने नादवेद की संज्ञा प्रदान की हैं।

गीतं वाद्यं नृत्यं त्रय संगीतमुच्यते

भारतीय संगीत के तीन अंग है गीत, वादन और नृत्य जिसे सम्मिलित रूप से संगीत कहा जाता है। मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी शुभ कार्यों में, प्राकृतिक विपदाओं में दुःख में सुख में हम किसी न किसी रूप में संगीत से जुड़े रहते है। अपने इष्ट की प्रार्थना में भी संगीत ही हमारी वाणी बनता है। विज्ञान कहिये या कला, संगीत, उन सभी विधाओं में से एक है जिसकी चर्चा सभी समाजों में होती आयी है। राजनैतिक, सामाजिक बौद्धिक सभी स्तरों से होती हुई सांगीतिक अभिव्यंजना अपने अन्दर रस और भाव को संजोये हुए चिर स्थाई संस्कार है।

जन सामान्य के बीच रचा बसा यह संगीत लोक संगीत कहलाता है और यहीसंगीत जब शास्त्र के सिद्धान्तों और नियमों में बँध जाये तो शास्त्रीय बन जाता है। शास्त्रीय अर्थात् शास्त्र सम्मत कुछ नियमों के अन्तर्गत प्रचलित संगीत। संगीत, साधना का विषय है और सांस्कारिक क्रिया है जो अपने सरल स्वभाव के कारण लोक जीवन को प्रफुल्लित करने का उपादान है। अन्य शब्दों में संगीत मानव जीवन की वह सांस्कारिक क्रिया है जो स्वर लय से सुसज्जित होने पर अखिल विश्व को अपने में समाहित करने के लिये विराट एवं व्यापक रूप धारण कर लेती है।

संगीत न केवल मनोरंजन का साधन है अपितु मनष्य के दिल और दिमाग को ताजगी प्रदान करता है। यह संगीत मनुष्य के मनोभावों को सुसंस्कृत बनाता है और उसके वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण को विकसित कर सुदृढ़ बनाता है। यही कारण है कि स्कूलों में संगीत शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल किया गया है। संगीत शिक्षा से सम्पूर्ण व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। बच्चों की क्रियात्मक क्षमता बढ़ती है, साथ ही एकाग्रता, अनुशासन, बड़ों का आदर, व्यवहार में सौम्यता, वाणी में विनम्रता का विकास होता है। उनके अंदर प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती है और सामूहिक रूप से कार्य करने की क्षमता बढ़ती है, पढ़ाई में उन्नति होती है, स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। विश्व को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता है संगीत में। संगीत की भाषा मैत्री की भाषा है जो हमारी कल्पनाओं की उड़ान को बल प्रदान कर नवचेतना का संचार करती है।

संगीत स्वरों पर अवलम्बित है और स्वरों से सुसज्जित यह संगीत अपने विशेष अलंकारों और रंजक गुण से सबको मोहने की क्षमता रखता है। संगीत मनुष्य के जीवन को सरल बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यदि संगीत का अस्तित्व मिट जाये तो दुनिया बड़ी नीरस, कड़वी और कर्कश प्रतीत होने लगेगी। साधारण पशु की अपेक्षा मनुष्य को जो आनन्दमयी स्थितियाँ प्राप्त है उसमें संगीत का बहुत बड़ा योगदान है। कहा भी गया है–

साहित्य संगीत कला विहीनः।
साक्षात् पशु पुच्छ विशाणहीनः।।

वैज्ञानिक शोधों से यह सिद्ध किया गया है कि संगीत मस्तिष्क के लिये एक ऐसा अदृश्य भोजन है जो आश्चर्यजनक तत्वों से सुनने वालों को शारीरिक व मानसिक चेतना से परिपूर्ण कर देता है। प्रतिस्पर्धा के युग में जहाँ हर वक्त बस काम में ध्यान रहता है संगीत ही एक ऐसी कला है जो मानव को अपने कोमल स्पर्श से झंकृत कर उसे नई स्फूर्ति प्रदान कर सकता है।

ऐतिहासिक परिदृश्य और संगीत

संगीत का प्रारम्भ मानव कंठ की क्रिया प्रतिक्रिया से ही जुड़ा रहा है क्योंकि शरीर के अंदर जो स्वर तंत्रियाँ है, उनके द्वारा स्वाभाविक प्रतिक्रिया सम्भव थी। किसी बाहर के अवयव को प्रयोग में लाना, यह बाद की बात थी। इसीलिए गायन तो वादन से पूर्व माना जाता है और प्रायः सभी विद्वान इस बात पर एकमत हैं। अनेक संस्कृतियों और सभ्यताओं के संपर्क में आने के बाद भी भारतीय संगीत परम्परा मैलोडी पर आधारित होने के कारण विश्व में अपना अलग स्थान रखती है। मैलोडी संगीत वह विशेष प्रक्रिया है जिसमें एक–एक स्वर का विस्तार करते हुए सम्मिलित स्वरावली और विशिष्ट स्वर संयोग द्वारा प्रभावशाली और मंत्रमुग्ध करने वाला संगीत उत्पन्न होता है। इसके विपरीत हारमोनी संगीत में एक स्वर समुदाय विशष को दूसरे स्वर समुदाय विशेष के साथ सम्मिलित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। यह पाश्चात्य परम्परा है परन्तु हमारा भारतीय संगीत चाहे वह लोक संगीत हो या शास्त्रीय दोनों मैलोडी पर आधारित है।

भारतीय संगीत हमारे देश की मौखिक परम्परा का द्योतक है जो मानव संवाद का सदियों से माध्यम बना है जिसके द्वारा ज्ञान, कला, संस्कृति, सभ्यता को संरक्षित व संचित कर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सफलता से पहुँचाया गया है। इतिहासकार या पुरात्वविद् इन्हीं एतिहासिक तथ्यों को, लिपियों आदि का संग्रह, आंकलन व अवलोकन करने के लिये वैज्ञानिक रीति का प्रयोग करते हैं जिसमें साक्षात्कार भी मुख्य अंग है।

आदिकाल में दो सभ्यताओं का विकास हुआ एक रावी नदी के किनारे हड़प्पा और सिंधु नदी के किनारे मोहन जोदड़ो। पुरातत्व विभाग द्वारा प्राप्त अवशेशों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह युग अत्यन्त ही विकसित युग था। इस युग में मनुष्य घर, बनाकर, पशुओं का पालन करता था, साथ ही साहित्य, कला और शिल्प भी अत्यन्त विकसित अवस्था में था। पुरातत्व विभाग द्वारा प्राप्त खुदाई में संगीत और नृत्य के अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं। कांस्य धातु की एक नर्तकी की मूर्ति इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि संगीत कला अपने चरम पर थी और अनेक वाद्यों का भी विकास हो चुका था। अनेक अवनद्ध, सुशिर और तत् वाद्यों का भी प्रमाण मिलता है जैसे– बाँसुरी, वीणा, दुंदुभि आदि।

आज हमारा भारतीय संगीत जो उपलब्ध है वह प्राचीनकाल में विकसित और पुश्पित हुआ। लगभग सभी लोक जातियों, आदिवासियों और मानव संस्कृतियों ने संगीत की उन्नति में अपना योगदान दिया हैं आज जिसे हम राग कहते हैं उसका प्रारम्भिक रूप लोक धुन का ही प्रतिरूप हो ऐसा मानने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसी तरह विषम तालों की जड़े भी लोक संगीत की लयात्मक और प्राचीन संगीत से ही दिशा पाती हैं। सांगीतिक एक छोटी सी धुन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रसारित या हस्तान्तरित होती है जो परम्परा की वाहक बनकर सदियों

तक हमारे बीच विद्यमान रहती है। इस प्रक्रिया में परिवर्तन होना स्वाभाविक है परन्तु यह परिवर्तनशीलता नवीन गुण और आवरण के साथ अपना नया रूप प्रस्तुत करती है जोकि उपज कहलाती है। उपज भारतीय संगीत को वह विशेषता है जो मूल रचना में अपनी इच्छा से नवीन प्रयोगों द्वारा अलंकष्त कर कलाकार की चेष्टाओं के प्रतिरूप में हमारे समक्ष आती है। यह हमारे संगीत की विशेषता और सुन्दरता है जो भारतीय संगीत को अन्य संगीत परम्पराओं में विशेष स्थान दिलाती है। उपज की इस क्रिया में कलाकार को अपनी संवेदनाओं, अनुभव और काल्पनिकता का रूप दृष्टिगोचर होता है। संगीतज्ञ स्वतन्त्र रूप से अपने मनोभावों का प्रदर्शन अपनी रचना में कर सकता है तभी तो एक ही राग, एक ही बंदिश लेकिन प्रस्तुतिकरण में कलाकार की स्वयं की कल्पना उसे हर बार नया रूप प्रदान कर देती हैं यह रचना किसी स्थान या क्षेत्र विशेष की सुगन्ध, जहाँ पर उसका जन्म हुआ है से लेकर, उस क्षेत्र की भाषा, संस्कृति, आदि प्रभावों को अपने में आत्मसात कर विशेष आकार–प्रकार ग्रहण करती है।

हमारे देश का लोक संगीत इसका जीवन्त उदाहरण है जहाँ संगीत, रीति रिवाजों, लोक कथाओं, किवदंतियों, धार्मिक पर्वों पर गाये जाने वाले गीत, सांस्कारिक गीत, दैव उपासना, भजन आदि के रूप में अविरल चले आ रहे है। लोक संकृति को इसी मौखिक परम्परा ने सदियों से हमारी सांगीतिक परम्परा को अक्षुण्य रखा और इसको विश्वश्नीयता का प्रमाण है कि धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, दार्शनिक, शैक्षिक सभी मान्यताओं को सदियों तक संचित रखा।

लोक संगीत देश की सांगीतिक विरासत

संगीत एक सार्वभौमिक भाषा है जो देश और राज्यों की सीमा से परे सभी स्थानों पर समान रूप से समझा जा सकता है। हमारा भारतीय संगीत विश्व संगीत की जननी है। किसी भी क्षेत्र का संगीत हो चाहेवह राजस्थान का मांड, बंगाल की भटियाली धुन सभी आपस में मिलकर हमारे देश की सांगीतिक विरासत का हिस्सा बनते हैं। संगीत में ऐसी शक्ति है जो सभी को एक सूत्र में बाँध सकता है। हमारा प्राचीन संगीत मुख्य दो भागों में विभक्त है– मार्गी और देशी संगीत। छठी शताब्दी में संगीत शास्त्रकार पं0 मतंग ने यह पाया कि लोक या आदिवासी संगीत में संगीत सम्बन्धी कोई व्याकरण उपलब्ध नहीं था अर्थात् ये संगीत शास्त्रीय संगीत केरूप में मान्यता प्राप्त करने लगा जिसमें संगीत सम्बन्धी व्याकरण के साथ–साथ नियमित और निश्चित नियमों का पालन किया जाता था। यह अत्यन्त ही उच्च स्तरीय संगीत था। इसके अतिरिक्त जितने भी प्रकार के सांगीतिक रूप या शैलियाँ प्रचलित हुए उनका विकास देशी संगीत के अंतर्गत हुआ। इसका तात्पर्य यह हुआ कि लोक संगीत देशी संगीत नहीं था।

भारतीय संगीत को वृहद् रूप से सामाजिक परिस्थितियों और सांगीतिक श्रेणी के अनुकूल इस प्रकार बाँटा जा सकता है–

1. आदिवासी या जनजातीय संगीत
2. लोक संगीत
3. पारम्परिक संगीत
4. उपशास्त्रीय संगीत

5. शास्त्रीय संगीत

आदिवासी और लोक संगीत को एक ही श्रेणी में रखकर क्षेत्रीय या प्रान्तीय संगीत की श्रेणी में रखा जा सकता है। पारम्परिक संगीत, जिसके अंतर्गत उपशास्त्रीय और शास्त्रीय विधाओं का समावेश किया जाता है।

भारत की समृद्धिशाली सांस्कृतिक विरासत का अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि परम्परागत सभी कलायें और संगीत की विभिन्न अनेकानेक खूबियों और प्रकारों से भरी पड़ी है जिसमें देश, क्षेत्र के जरा से अन्तर से नवीन कला का सृजन होता है।

लोक संगीत भी कई भागों में बँटा है जैसे–सांस्कारिक, तीज त्यौहार से सम्बन्धित, मौसमी या ऋतुकालीन, कोई विशेष आयोजन जैसे–यज्ञोपवीत, विवाह, भक्ति गीत, लोक गाथायें, नृत्य नाटिकायें आदि। प्राचीनकाल में संगीत को किसी ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक मानकर इसका प्रयोग धार्मिक क्रिया–कलापों में जनमानस में प्रचलित था इसीलिये तो सभी आयोजनों में संगीत सर्वोपरि रहा चाहे मंत्र उच्चारण हो या देशी गीत इन गीतों के साथ लोक वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग होता रहा है।

सामाजिक धार्मिक, तीज त्यौहारों से सम्बन्धित क्षेत्रीय लोक गीत

इन सभी प्रकार के संगीत में सामूहिक रूप से परिवार और समाज के लोग भाग लेते हैं। बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और प0 बंगाल का कर्मा त्यौहार जहाँ सभी स्त्रियाँ और पुरूष एक वक्ष के चारो ओर कपड़ा बाँधकर दीया जला कर गाते और नष्त्य करते हैं।

कर्नाटक में कर्गा उत्सव में मिट्टी के घड़े को सुन्दर सा सजा कर सिर पर रखकर नृत्य किया जाता है।

उत्तर भारत में होली पर होली से सम्बन्धित गीतों की परम्परा है। सामाजिक गतिविधियाँ जैसे–शादी, मुडंन, जनेऊ आदि संस्कारोंमें भी पारम्परिक गीतों का प्रचलन है। सोहर, पुत्र जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला गीत है जो न केवल हिन्दू परिवारों में अपितु मुसलमानों में भी गाया जाता है। ये हमारी मिली जुली संस्कृति का ही परिचायक है।

सभी क्षेत्रों में ऋतुकालीन गीतों का भी प्रचलन है। जैसे–वर्शा ऋतु में, कजरी, चैती, झूला आदि।

भाखा जम्मू कश्मीर का प्रचलित लोकगीत है जो फसल कटाई पर गाया जाता है।

मोरिया, राजस्थान का सुमधुर संगीत है जिसमें मोर की प्रशस्ति में गीत गाये जाते हैं जो सांकेतिक और संवेदनापूर्ण होते हैं।

लावनी, महाराष्ट्र का लोक नष्त्य है जिसे तमाशा या लोक नाटक के मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

बंगाल, आसाम, उड़ीसा, मणिपुर का कीर्तन, दक्षिण भारत की हरि कथा, बंगाल का बाउल, उड़ीसा का जन्ना, उत्तर भारत का देवी गीत आदि अनेक लोक गीत गाथायें जैसे पंजाब का हीर–रांझा, राजस्थान का प्रभु जी का पद, उत्तर प्रदेश का आल्हा, बिहार का बंजारा, बंगाल का कंनीगम, मध्य प्रदेश का पाण्डुवानी आदि।

उपसंहार

भारत की सांस्कृतिक परम्परा में संगीत की परम्परागत शैलियों का वृहद और अमूल्य खजाना विद्यमान है लेकिन दुःख की बात है कि इस पारम्परिक शैलियों की विरासत को सहेज कर रखने के सभी प्रयासों के बाद भी धीरे–धीरे इनका पतन और लोप हो रहा है। देश में और विदेश में अब यह माना जा रहा है कि लोक कलाओं के संवर्धन और उनके विकास के लिये इन परम्परागत लोक शैलियों का जीवित रहना अतिआवश्यक है। ये कलायें किसी भी दृष्टि से निम्न नहीं कही जा सकती क्योंकि इन्हीं कलाओं के पोषण से हम अपनी संस्कृति को धरोहर रूप में सदियों तक सुरक्षित रख सकते हैं।

ये लोक परम्परायें मौखिक परम्परायें हैं जिन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तान्तरित किया जाता है। साधारण शब्दों में कहें तो कोई भी भाषण, गाना, लोक कथायें, किवंदतियाँ, नृत्य नाटिकायें, मंत्र, गद्य, पद्य, कविताओं का संग्रह जब वे मौखिक रूपसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक वाहक बनता है तो उसे मौखिक परम्परा कहते हैं और इनका संरक्षण और संवर्धन समाज की जीवनधारा का संरक्षण है।

संदर्भ

1. A glimpse of oral tradition of music in India (Artistic Naration) - Dr. Ruchimita Pande
2. हिन्दी प्रदेश के लोकगीत–डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोक गीतों के संदर्भ और आयाम–शान्ति जैन
4. राजस्थान का लोक संगीत–देवी लाल साभर
5. मध्य प्रदेश का लोकसंगीत–शरीफ मोहम्मद
6. भारतीय संगीत का इतिहास–ठाकुर जयदेव सिंह
7. भारतीय संगीत का इतिहास–उमेश जोशी
8. A historical study of Indian music- Swami Prajananda
9. संगीत मासिक पत्रिका–जनवरी–फरवरी 2001